अध्याय - प्रथम

आरंभ

(रूपमाला छंद)

स्वप्न में भी जो नहीं थे धर्म पंथ प्रतीप[1] ।
प्रजापरिपालक कहाते नृपति राज प्रतीप ।
कन्यका शिवि देश की अप्रतीप धर आचार ।
राजपत्नी कांतिनिधि सुकुमारता का सार ॥1॥

प्रीत थे पाकर प्रिया को पार्थिवेन्द्र प्रतीप ।
शिवि सुता वह सुनन्दा थी सर्वदा अप्रतीप ।
सुधा स्यन्दिनि शशिप्रभासम प्रेम रस आपूर्ति ।
सुचिर संचित सुकृत[2] जाता दिव्यता की मूर्ति ॥2॥

त्रिगण[3] सेवी गणाधिप के तनय थे शुभ तीन ।
भानु हिमकर चित्रभानु[4] समान धाम[5] नवीन ।
मधुर ओजस अनुव्रजित[6] था प्रकट या कि प्रसाद ।
त्रिगुण संगम देख नृप का चित्त था सप्रसाद ॥3॥

उदित थे देवापि अग्रज देव गुण सम्पन्न ।
और मध्यम मणि सदृश शांतनु हुए उत्पन्न
अनुग थे बाह्लीक बलयुत प्रबल विक्रम मूर्ति ।
तुष्ट राजा विहित थी जनकामना संपूर्ति ॥4॥

किंतु सनकादिक सदृश देवापि[7] ले सन्यास ।
बालपन में ही गये वन कृतजगतरूचिन्यास ।
शांत शांतनु ने उठाया राज्य का गुरूभार।
पश्चिमोत्तर देश पर था अनुज का अधिकार ॥5॥

प्रजा के आनंद वर्धन थे सुनंदा जात ।
विप्र अभिनंदक अनिंदित चरित था अवदात[8] ।
नन्दकोपम[9] धारते थे असि सिताभ[10] निषात 11।
धनुर्धर वे राम से थे शत्रु को प्रतिभात ॥6॥

1. विपरीत
2. पुण्य
3. धर्म, अर्थ तथा काम
4. अग्नि
5. तेज
6. अनुगत
7. राजा प्रतीप के पुत्र
8. शुभ
9. भगवान विष्णु की तलवार
10. श्वेत आभा वाली
11. तीक्ष्ण धार वाली

सर्वत:1 प्रशमित अमित बल से समस्त अमित्र[2] ।
सगज गजपुर में विराजित अजित ज्यों नभ मित्र[3] ।
पृथितयष पार्थिव[4] सुपूजित सृजित दिव्य सुराज ।
नरवाहनाधिक[5] संपदायुत रूचिरश्री नरराज ॥7॥

सर्वथा संतुष्ट पुरूजन सकल साधनवान ।
सुकृत पर परहित निरत थे धर्म से धनवान ।
जनवदनप्रतिबिंबिता थी नृपतिश्री अभिराम ।
हुई वसुधा[6] आज वसुधा सत्यकर निजनाम ॥8॥

कृपाकर[7] कुरूनाथ[8] ने कर कृपा यह आदेश ।
दिया होगा नहीं पशुवध किसी भी अपदेश ।।9।।
हिंसना हितकारिणी होती न जागे लोक ।
मात्र करूणा मनुज को करती यहां गतशोक ॥10॥

नाथता[10] थी प्राप्त पशुगण को जहां अन्यत्र ।
नाथता थी प्राप्त पशु तक को अनूठी अत्र ।
कौन हो सकता वहां पर उपेक्षित निरूपाय ।
जहां शांतनु से सुषासक हों सयत्न सहाय ॥11॥

नृप अनुष्ठित धर्म को अवलोक कर आचार ।
अनुगता[11] स्वयमेव धरता राजकुल[12] साभार ।
अनुसरणधर्मा सदा ही नायकों का लोक ।
अत: प्रतिबिंबित सकल उर धर्म का आलोक ॥12॥

1. सब ओर	5. कुबेर	9. बहाना
2. शत्रु	6. धन को धारण करने वाली	10. स्वामी भाव/पशुओं की नाथ
3. सूर्य	7. करूणावान	11. अनुयायी भाव
4. राजा	8. शान्तनु	12. राजागण

भय था केवल पाप कर्म से
नि:श्रेयस[1] की चिंता ।
बहुमानित था जनमें केवल
अरिषडवर्ग[2] निहंता ।
रूपकादि अभिनय सीमित था
नर का सकरूण रोदन ।
नृप गुरूपितृदत्त आज्ञा का
अविचारित अनुमोदन ॥12॥
शास्त्रतत्वनिर्णय तक सीमित
थे बस वाद सुजन के ।
परहित धर्म हितार्थ मात्र थे
होते संग्रह धन के ।
वानप्रस्थ में ही दिखती थी
स्वारोपित निर्धनता ।
नहीं विशिष्ट भाव पूजित थी
जनपद मध्य सुजनता ॥13॥

रीति3 नीति पोषक सगुण[4] अर्थान्वित[5] शुभवृत्त ।।6।।
वर्ण7 व्यवस्थिति पटु प्रखर नित जन भूति[8] प्रवृत्त ॥14॥

मानित यति[9] भूषित सुभग सुखदायक गत दोष ।
दण्डकयुत[10] मात्रज्ञता[11] धृत पामरजन रोष ॥15॥

सर्वमान्य प्रभविष्णुता भव्यकर्म जितभाव्य[12] ।
शांतनु थे जनप्रिय सदा मानो सत्कवि काव्य ॥16॥

चले पुर से पर[13] पुरंदर[14] प्रतीकात्मज आज ।
सजव[15] रथ से साथ में था नहीं सुभट समाज ।
प्रणत जन-गण नयन को निज कांति से कर धन्य ।
वनोन्मुख दुख हेतु हरने मारने पशु वन्य ॥17॥

1. परम कल्याण	2. काम क्रोधादि, छः शत्रु
3. लोक प्रचलन, काव्य की वैदर्भी	4. गुण युक्त, काव्य युक्त, प्रसाद माधुर्य
5. ओज युक्त, धन युक्त, अर्थ भरा	6. उत्तम चरित्र/छंद
7. विप्रादि वर्ण, अक्षर मात्रा ज्ञान युक्त	8. कल्याण
9. मुनि, योगी, छन्द में विराम	10. राजदण्ड, दण्डक आदि
11. दण्डादि की मात्रा जानने वाला	12. भविष्य /जयी
13. शत्रु	14. इन्द्र, नगरों का नाशक
15. वेगवान	

रथ रव को अवधार[1] कर स्वन[2] घन का गंभीर ।
लगे बोलने चतुर्दिक केकी हुए अधीर ॥18॥

वर्धित गति आवेगवश मृग जव[3] के असहिष्णु ।
सर्वातिग[4] बढ़ते चले वनपथ हरि[5] प्रभ विष्णु6 ॥19॥

सरसीरूह[7] का देख कर सरसी में सुविकास ।
सहसा शांतनु हृदय में उचित विचार प्रकाष ॥20॥

सरसांतर[8] शीतल प्रकृति समता को उपलब्ध ।
कांति सुरभि सुविकास को कर सकते है लब्ध ॥21॥

निर्मल जल में देख निज मोहक छवि धृतगर्व ।
परम उल्लसित तामरस[9] नभ में उठे अखर्व ॥22॥

पुण्डरीक दल मध्यगत लोचन गत न मराल ।
निहनव[10] रत सी शुभ्रता देख हंसे भूपाल ॥23॥

इंद्रनील मणि कांति को इंदीवर[11] परिभूत ।
विजय हास रत से लगे नृप भी थे अभिभूत ॥24॥

और कोकनद[12] अरूणिमा तरूणाई का सार ।
है सकोकरव[13] श्रुतिसुखद हर्षित है अति मार[14] ॥25॥

कमलपत्र आरोह को उद्यमरत शिशु हंस ।
देख मुदित थे सकौतुक कुरूकुल के अवतंश ॥26॥

चपल उत्प्लवनशील अति निज शावक अवलोक ।
हर्षित चिंतित भी वहां मृगी रही है रोक ॥27॥

पुष्ट खड़ा सांभर लिए वितत[15] श्रृंग संभार ।
दर्शाता ज्यों मनुज को ही न मुकुट अधिकार ॥28॥

1. समझकर	2. शब्द	3. वेग	4. सबसे बढ़कर
5. घोड़ा, विष्णु	6. प्रभावशाली	7. कमल	8. रसयुक्त हृदय वाला
9. कमल	10. छिपाने में लगी	11. नील कमल	12. लाल कमल
13. चक्रवा पक्षी की बोली सहित	14. कामदेव	15. विस्तृत	

खुरदारित[1] करता धरा बलनिधि महिष समान[2] ।
बलरिपुसुतप्रतिरोषधर[3] दुंदुभि असुर समान ॥29॥

पुच्छ-गुच्छ को काटता भी न कोप का पात्र ।
क्रीड़ारत शावक हुआ हरि[4] मन मोदक मात्र ॥30॥

सुरसरि[5] जल क्रीड़ा निरत करि छोड़ते फुहार ।
आरोपितकर[6] पृष्ठ पर स्थित करिणी साभार ॥31॥

उत्पाती तट पर खड़ा दल निष्कासित मौन ।
बल्लभता को प्राप्त है समद[7] जगत में कौन ॥32॥

नृप उपगमन अभीरू[8] रह पिकगायन असमाप्त ।
अलिगण गुंजन की उसे तंतुवाद्यता प्राप्त ॥33॥

सद्य:[9] सूता मृगी पर ज्यों झपटा शार्दूल ।
कुरू विमुक्त शर घुस गया अंतर[10] में आमूल ॥34॥

चल लक्ष्यों के वेध में भी शर धरें अमोघ ।
रण हरि फिरें अरण्य में हैं शरण्य[11] बल ओघ[12] ॥35॥

धारित रोहित[13] कुसुम ही सेमल पल्लवहीन ।
विग्रह[14] सा अनुराग का तरूवर हुआ अदीन ॥36॥

राजित राजत[15] रेणुमय तटिनी का यह कूल ।
मानो तरूणी शोभिता धारित शुभ्रदुकूल ॥37॥

देख रसा[16] सरसा[17] विपुल सारस के नववृन्द ।
नर्तन क्रीडानिरत हैं विरतासन[18] स्वच्छंद ॥38॥

1. खुरों से विदीर्ण	7. मद युक्त	13. लाल
2. अभिमान युक्त	8. निर्भय	14. शरीर आकृति, मूर्ति
3. इन्द्र पुत्र बालि	9. हाल ही का	15. चाँदी का
4. सिंह	10. हृदय	16. पृथ्वी
5. गंगा	11. शरण लेने योग्य	17. जल युक्त
6. सूंड़	12. प्रवाह	18. भोजन बंद कर